CONTENTS

INDEX

TITLE	Page(s)
WORKPLACE ENVIRONMENT AND ITS IMPACT ON ORGANISATIONAL PERFORMANCE IN PUBLIC SECTOR ORGANISATIONS **Dr. Amit kr. Jain, Dr. J.K Sharma**	**02**
SERVICE QUALITY ASSESSMENT IN SELECTED HOSPITALS WITH SPECIAL REFERENCE TO KURUKSHETRA DISTRICT IN HARYANA **Dr. Ranjeet Verma, Parmod Kumar Singhal, Mr. Sunil Kumar**	**23**
PERSPECTIVE ON VALUE ORIENTED TEACHER EDUCATION IN INDIA **Dr. Poonam Singh Kharwar**	**37**
THE ROLE OF ICT IN HIGHER EDUCATION FOR THE 21ST CENTURY: ICT AS A CHANGE AGENT FOR EDUCATION **Dr. Shivpal Singh, Mr.Rakesh Kumar Keshari**	**48**
पहाड़ी तथा मैदानी क्षेत्रों में निवास करने वाले स्नातक स्तर विद्यार्थीयों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन प्रो० बी० सी० दुबे ,वर्षा पन्त	**61**
स्नातक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार का अध्ययन प्रो0 भावेश चन्द्र दुबे , सोनम	**72**

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

DVS International Journal of Multi-Disciplinary Research ISSN NO 2454-7522
ISSUE: 02 Vol: 1, No. 2 October – December 2015

"पहाड़ी तथा मैदानी क्षेत्रों में निवास करने वाले स्नातक स्तर विद्यार्थीयों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन"

*प्रो० बी० सी० दुबे
शिक्षा संकाय अध्यक्ष, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विष्वविद्यालय ,मेरठ।
** वर्षा पन्त
एम० फिल० (षिक्षा षास्त्र) छात्रा,
शिक्षा संकाय, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विष्वविद्यालय,मेरठ।

सारांश

आशा और निराषा के मध्य सांसारिक जीव अपने जीवन के सफर के पुराने पड़ावों को छोड़ते हुए, नऐ पड़ावों के साथ दिन–प्रतिदिन आगे बढ़ते चले जा रहे हैं। मनुश्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक बहुत सारी परिस्थितियाँ ऐसी होती है, जिसमें मनुश्य की कोई भी भूमिका नहीं होती है तथा मनुश्य अपनी परिस्थितियों से समायोजन कर अपने जीवन को आगे बढ़ाता जाता हैं। ऐसी ही परिस्थिति एक मनुश्य के जन्म लेने की है, जिसमें उसकी कोई भूमिका नहीं होती। कोइ पहाड़ी क्षेत्र में, तो कोई मैदानी क्षेत्र में जन्म ले सकता हैं। सर्वविदित है कि वातावरण के समय ही मनुश्य के व्यक्तित्व के व्यक्तित्व का विकास होता हैं। मनुश्य को जिस प्रकार का वातावरण मिलता है, मनुश्य का व्यक्तित्व भी उसी ढ़ाचे में ढ़लता जाता हैं। जिसमें सबसे अंहम प्रष्न है कि क्या पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों का वातावरण एक ही हैं ? क्या पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों के व्यक्तियों का व्यक्तित्व विकास एक समान होता हैं ? इन्हीं प्रष्नों के उत्तर की तलाष में अध्ययनकर्त्ती ने प्रस्तुत समस्या का चयन किया हैं। जिसके माध्यम से व्यक्तित्व के कुछ कारकों के मध्य पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों में निवास करने वाले विद्यार्थीयों के व्यक्तित्व में कहीं विभिन्नता पाई गई है, तो कहीं समानता पाई गई है, जो प्रपत्र के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा हैं।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

प्रस्तावना :–

मानव जीवन में षिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका हैं। उसके व्यवहार में परिमार्जन लाने का कार्य षिक्षा ही करती हैं। षिक्षा द्वारा ही व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, समाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा अध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है और व्यक्ति का व्यक्तित्व सदृढ़ बनता जाता हैं। षिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपनी दैनिक समस्याओं का समाधान करता है,जीवन को आनन्दमय बनाता है तथा जनकल्याण के कार्यों की ओर प्रवृत्त होता हैं। इस प्रकार षिक्षा के माध्यम से व्यक्ति समाज व राश्ट्र का एक सुयोग्य, कत्तर्व्य निश्ठ व सजग नागरिक भी बनाता हैं। षिक्षा के मानव जीवन के लिए इतना महत्वपूर्ण होने के कारण ही आज षिक्षा की सार्वभौमिकता पर बल दिया जा रहा हैं। पूरे देष में सर्व षिक्षा अभियान चलाया जा रहा हैं।

आज षिक्षा को जन्मसिद्ध अधिकार माना जा रहा हैं। षिक्षा की विषाल महत्ता व उपयोगिता के कारण ही संविधान में षिक्षा को एक मौलिक अधिकार के रूप में निर्दिश्ट किया गया हैं। आज षिक्षा के प्रचार व प्रसार में तेजी आ रही है, इस कारण हर राज्य व क्रेन्द्र अपने–अपने स्तर पर षिक्षा के विकास के लिए कार्य कर रहे हैं। जिससे की आने वाली पीढ़ी को संस्कृति व ज्ञान के स्थानान्तरण के साथ ही एक कुषल नागरिक बनाया जा सके, जिससे हमारा देष विकासषील देष से विकसित देष बन जाए।

हमारे देष में हर जगह परिस्थिति व वातावरण समान नहीं हैं। कहीं पहाड़ है, तो कहीं मैदान हैं। इस प्रकार देष काल परिस्थिति के अनुसार स्थान विषेश की समाजिक आवष्यकताओं में अन्तर पाया जाता है तथा उसी के अनुरूप षिक्षा की व्यवस्था की जाती हैं। जिस प्रकार की षिक्षा बालकों को प्रदान की जाती है, बालकों का व्यक्तित्व भी उसी प्रकार विकसित होता हैं। वातावरण विषेश का प्रभाव भी मनुश्य के व्यक्तित्व पर पड़ता हैं। व्यक्तित्व वह है, जो व्यक्ति के व्यवहार, अभिरूचि, षारीरिक रचना, बौद्धिक स्तर, चरित्र तथा इसी प्रकार से स्पश्ट लक्षणों से मिलकर बनता हैं। इस प्रकार व्यक्तित्व षब्द से सम्पूर्ण व्यक्ति का आभास होता हैं। इसी आधार पर हम अनेक व्यक्तियों को हंसमुख, आकर्शक, प्रभावषाली, डरपोक आदि मान लेते है। हमारी इस प्रकार की धारणाएँ एक दिन में ही नहीं बनती है, अपितु भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार को देखने और समझने के बाद बनती हैं।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व होता है, जो अन्य किसी भी व्यक्ति से भिन्न तथा विषिश्ट होता हैं। यह देखा जाता है कि व्यक्ति वातावरण में निरन्तर समायोजित होने का प्रयास करता है, परिवर्तनषील वातावरण में अपने आपको परिवर्तित करता है, समायोजन करता है, और परिस्थितियों का मुकाबला करते हुए आगे बढने की चेश्टा करता हैं। व्यक्ति अपनी परिस्थिति के साथ जितना समायोजित होता जाता है, उसका व्यक्तित्व उतना ही विकसित होता जाता हैं।

एडरेड, डी (1959) ने अपना षोध अध्ययन व्यक्तित्व व षैक्षिक उपलब्धि के मध्य किया। उन्होने निश्कर्श में यह पाया कि व्यक्तित्व व षैक्षिक उपलब्धि के बीच धनात्मक सह–सम्बन्ध होता हैं।

मनराल, जे० बी० एस० (1985) ने कुमाऊँ विष्वविद्यालय तथा गढ़वाल विष्वविद्यालय के विद्यार्थियों के अनुषासनिक व्यवहार का सृजनात्मकता और व्यक्तित्व से सम्बन्ध का अध्ययन किया। षोध अध्ययन के आधार पर यह परिणाम निकला कि व्यक्तित्व कारक अनुषासनिक व्यवहार से सम्बन्धित होते हैं।

अध्ययन की आवष्यकता–

पृथ्वी अपनी भौगोलिक रचना के अनुसार कहीं मैदान में विभाजित है, तो कहीं पहाड़ी क्षेत्रों में। इस प्रकार यह वातावरणीय परिस्थितीयाँ व जलवायु मैदानी व पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालती हैं। पहाड़ में रहने वाले लोगों का रहन–सहन, खान–पान, परम्पराएं, रीति–रिवाज अलग होता है व मैदानी क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों का अलग होता हैं। पहाड़ी क्षेत्रों पर मौसम सर्द रहता हैं। सर्द मौसम का सीधा प्रभाव पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की कार्यषीलता पर भी पड़ता हैं। संसाधनों का वहां अभाव ही रहता है, साथ ही साथ षिक्षा व मनोरंजन व साधनों में भी कमी परिलक्षित होती हैं। मैदानी क्षेत्रों में सुख–सुविधाओं का आधिक्य होता है, षिक्षा व मनोरंजन के साधनों की प्रचुरता होती हैं। इस प्रकार यह देखा जाता है, कि पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों में काफी अन्तर होता हैं। ये अन्तर पर्यावरणीय भी होता है व संसाधनों की सुविधाओं में भी दृष्टिगोचर होता हैं। क्या वास्तव में पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों में निवास करने वाले व्यक्तियों के व्यक्तित्व पर वातावरण का प्रभाव पड़ता हैं। इसी समस्या के निदान के लिए शोधकर्ती के द्वारा प्रस्तुत समस्या पहाड़ी तथा मैदानी क्षेत्रों में निवास करने वाले स्नातक स्तर विद्यार्थीयों के व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन को चयनित किया हैं।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

अध्ययन की समस्या–

"पहाड़ी तथा मैदानी क्षेत्रों में निवास करने वाले स्नातक स्तर विद्यार्थीयों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन"

अध्ययन के उद्देष्य–

1– पहाड़ी क्षेत्र में निवास करने वाले स्नातक स्तर छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन।

2– मैदानी क्षेत्र में निवास करने वाले स्नातक स्तर छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन।

3–पहाड़ी तथा मैदानी क्षेत्रों में निवास करने वाले स्नातक स्तर विद्यार्थीयों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पनाएँ–

1– पहाड़ी क्षेत्र में निवास करने वाले स्नातक स्तर छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

2– मैदानी क्षेत्र में निवास करने वाले स्नातक स्तर छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

3– पहाड़ी तथा मैदानी क्षेत्रों में निवास करने वाले स्नातक स्तर विद्यार्थीयों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।

शोध परिसीमन–

प्रस्तुत अध्ययन मेरठ जनपद व नैनीताल जनपद तक सीमित रहा। प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर विद्यार्थीयों को ही सम्मिलित किया गया।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

शोध विधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण के विष्लेषणात्मक विधि के चरणों का अनुसरण किया गया।

षोध अभिकल्प :–

प्रस्तुत अध्ययन में दो स्थायी समूह अभिकल्पों की किया विधि का अनुसरण किया गया।

षोध उपकरण :–

प्रस्तुत अध्ययन में महेष भार्गो द्वारा निर्मित प्रमाणित व्यक्तित्व कारक अनुसूचि उपकरण का उपयोग किया गया।

जनसंख्या व न्यादर्ष :–

कुमाऊँ विष्वविद्याालय, नैनीताल व चौधरी चरण सिंह विष्वविद्याालय, मेरठ में अध्ययनरत स्नातक स्तर विद्यार्थीयों को इस अध्ययन की जनसंख्या मानते हुए स्तरीकृत विधि से चयनित कर, प्रत्येक विषविद्यालयों से 50 छात्र व 50 छात्राएँ को लिया गया। इस प्रकार न्यादर्ष आकार 200 रहा।

विष्लेशण व विवेचनः–

सारणी न०–1

पहाड़ी क्षेत्र में निवास करने वाले स्नातक स्तर छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन।

व्यक्तित्व	लिंग	औसत मान	प्रमाणिक विचलन	टी–परीक्षण T	सार्थकता अन्तर परिणाम
सक्रिय–निष्क्रिय	छात्र	15.54	2.26	1.36	नहीं है।
	छात्राएँ	15.02	1.69		
उत्साही–अनुत्साही	छात्र	15.28	1.96	1.13	नहीं है।
	छात्राएँ	14.86	1.91		
अक्रामक–विनम्र	छात्र	14.88	2.47	1.95	नहीं है।
	छात्राएँ	13.96	2.40		
शंकाल–ुविश्वासी	छात्र	16.88	1.84	2.59	है।
	छात्राएँ	15.92	2.05		
अवसादी–अवसादमुक्त	छात्र	14.26	2.34	0.39	नहीं है।
	छात्राएँ	14.44	2.47		

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

भावात्मक अस्थिरता– भावात्मक स्थिरता	छात्र	17.02	2.13	2.68	है।
	छात्राएँ	15.92	2.05		

df – 98 .05– 1.98

उपरोक्त सारणी में उद्देष्य न॰1 व परिकल्पना न॰1 की पुष्टि के लिए पहाड़ी क्षेत्र में निवास करने वाले स्नातक स्तर छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए अन्तर की सार्थकता ज्ञात की गई है। जिसमें पहाड़ी छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व के प्रत्येक कारक सक्रिय–निष्क्रिय, उत्साही–अनुत्साही, अक्रामक–विनम्र, शंकालु–विष्वासी, अवसादी–अवसादमुक्त, भावात्मक अस्थिरता–भावात्मक स्थिरता आदि का तुलनात्मक विष्लेषण किया गया हैं।

उपरोक्त विष्लेषणात्मक सारणी के विवेचन के आधार पर विदित होता है कि पहाड़ी छात्र व पहाड़ी छात्राओं के कारक सक्रिय–निष्क्रिय, उत्साही–अनुत्साही, अक्रामक–विनम्र तथा अवसादी–अवसादमुक्त पर प्राप्त प्राप्ताकों के औसत मानों के मध्य प्राप्त किए टी–परीक्षण का मान क्रमषः 1.36, 1.13, 1.95, 0.39 प्राप्त हुआ। जो स्वतन्त्रता के अंष 98 सार्थकता स्तर .05 के सारणी मान 1.98 से कम हैं। अतः कारक सक्रिय–निष्क्रिय, उत्साही–अनुत्साही, अक्रामक–विनम्र, अवसादी–अवसादमुक्त पर पहाड़ी छात्र व छात्राओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

इसी प्रकार पहाड़ी छात्रों व पहाड़ी छात्राओं के कारक शंकालु–विष्वासी तथा भावात्मक अस्थिरता–भावात्मक स्थिरता पर प्राप्त प्राप्ताकों औसत मानों के मध्य किए गए टी–परीक्षण का मान क्रमषः 2.59 तथा 2.68 प्रप्त हुआ। जो स्वतन्त्रता के अंष 98 के सार्थकता स्तर .05 के सारणी मान 1.98 से अधिक पाया गया। अतः व्यक्तित्व कारक शंकालु–विष्वासी, भावात्मक अस्थिरता–भावात्मक स्थिरता पर पहाड़ी छात्र व छात्राओं में सार्थक अन्तर पाया गया।

सारणी न०–2

मैदानी क्षेत्र में निवास करने वाले स्नातक स्तर छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन।

व्यक्तित्व कारक	लिंग	औसत मान	प्रमाणिक विचलन	टी–परीक्षण	सार्थक अन्तर परिणाम
सक्रिय–निष्क्रिय	छात्र	13.68	3.18	1.66	नहीं है।
	छात्राएँ	14.86	3.97		
उत्साही–अनुत्साही	छात्र	12.8	3.91	1.28	नहीं है।
	छात्राएँ	13.84	3.94		
अक्रामक–विनम्र	छात्र	11.72	4.29	0.76	नहीं है।
	छात्राएँ	12.36	4.20		
शंकाल–ुविश्वासी	छात्र	10.5	5.24	0.47	नहीं है।
	छात्राएँ	10.02	5.09		
अवसादी– अवसादमुक्त	छात्र	9.18	4.85	0.42	नहीं है।
	छात्राएँ	8.76	5.27		
भावात्मकअस्थिरता– भावात्मकस्थिरता	छात्र	11.82	4.33	1.22	नहीं है।
	छात्राएँ	12.8	3.69		

df – 98 .05– 1.98

उपरोक्त सारणी में उद्देष्य न॰ 2 व परिकल्पना न॰ 2 की पुष्टि के लिए मैदानी क्षेत्र में निवास करने वाले स्नातक स्तर छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए अन्तर की सार्थकता ज्ञात की गई है। जिसमें मैदानी छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व के प्रत्येक कारक सक्रिय–निष्क्रिय,उत्साही–अनुत्साही, अक्रामक–विनम्र, शंकालु–विष्वासी, अवसादी–अवसादमुक्त, भावात्मक अस्थिरता–भावात्मक स्थिरता आदि का तुलनात्मक विष्लेषण किया गया हैं।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

उपरोक्त विष्लेषणात्मक सारणी के विवेचन द्वारा विदित होता है कि मैदानी छात्र व मैदानी छात्राओं के कारक सक्रिय–निष्क्रिय, उत्साही–अनुत्साही, अक्रामक–विनम्र, शंकालु–विष्वासी, अवसादी–अवसादमुक्त, भावात्मक अस्थिरता–भावात्मक स्थिरता पर प्राप्त प्राप्ताकों के औसत मानों के मध्य प्राप्त किए गए टी–परीक्षण का मान क्रमषः 1.66, 1.28, 0.76, 0.47, 0.42, 1.22 प्राप्त हुआ। जो स्वतन्त्रता के अंष 98 सार्थकता स्तर .05 के सारणी मान 1.98 से कम हैं। अतः व्यक्तितव के प्रत्येक कारक सक्रिय–निष्क्रिय, उत्साही–अनुत्साही, अक्रामक–विनम्र, शंकालु–विष्वासी, अवसादी–अवसादमुक्त, भावात्मक अस्थिरता–भावात्मक स्थिरता पर पहाड़ी छात्र व छात्राओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सारणी न०–3

पहाड़ी तथा मैदानी क्षेत्रों में निवास करने वाले स्नातक स्तर विद्यार्थीयों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन।

पहाड़ी				मैदानी			
व्यक्तित्व	लिंग	औसतमान	प्रमाणिक विचलन	औसतमान	प्रमाणिक विचलन	टी–परीक्षण	सार्थक अन्तर परिणाम
सक्रिय–निष्क्रिय	छात्र	15.54	2.26	13.68	3.18		
	छात्राएँ	15.02	1.69	14.86	3.97	×× 0.4	नहीं है
उत्साही–अनुत्साही	छात्र	15.28	1.96	12.8	3.91	× 1.13	नही है।
	छात्राएँ	14.86	1.91	13.84	3.94	×× 1.67	नही है।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

अक्रामक–विनम्र	छात्र	14.88	2.47	11.72	4.29		
	छात्राएँ	13.96	2.40	12.36	4.20	×× 2.38	है।
शंकालु–विश्वासी	छात्र	16.88	1.84	10.5	5.24	× 8.28	है।
	छात्राएँ	15.92	2.05	10.02	5.09	×× 7.76	है।
अवसादी–अवसादमुक्त	छात्र	14.26	2.34	9.18	4.85		
	छात्राएँ	14.44	2.47	8.76	5.27		
भावात्मक अस्थिरता–भावात्मक स्थिरता	छात्र	17.02	2.13	11.82	4.33		
	छात्राएँ	15.92	2.05	12.8	3.69		

df – 98 . 05– 1.98

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

उपरोक्त सारणी में उद्देष्य न॰3 व परिकल्पना न॰3 की पुष्टि के लिए पहाड़ी व मैदानी क्षेत्र में निवास करने वाले स्नातक स्तर विद्यार्थीयों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए अन्तर की सार्थकता ज्ञात की गई है। जिसमें दोनों समूहों के व्यक्तित्व के प्रत्येक कारक सक्रिय–निष्क्रिय,उत्साही–अनुत्साही, अक्रामक–विनम्र, शंकालु–विष्वासी, अवसादी–अवसादमुक्त, भावात्मक अस्थिरता–भावात्मक स्थिरता के आदि का तुलनात्मक विष्लेषण किया गया हैं। दोनों समूहों के औसत मानों के मध्य किए गए टी–परीक्षण को निम्नलिखित चिन्हों से दर्षाया गया हैं।

× पहाड़ी छात्र व मैदानी छात्र

×× पहाड़ी छात्राएँ व मैदानी छात्राएँ

उपरोक्त विष्लेषणात्मक सारणी के चिन्हों के द्वारा दर्षायें गए आँकड़ों के आधार पर विदित होता है कि पहाड़ी छात्रों व मैदानी छात्रों के सभी व्यक्तित्व कारक सक्रिय–निष्क्रिय, उत्साही–अनुत्साही, अक्रामक–विनम्र, शंकालु–विष्वासी, अवसादी–अवसादमुक्त, भावात्मक अस्थिरता–भावात्मक स्थिरता पर प्राप्त प्राप्ताकों के औसत मानों के मध्य प्राप्त किए टी–परीक्षण का मान क्रमषः 3.44, 4.13, 4.57, 8.28, 6.77तथा 7.76 प्राप्त हुआ। जो स्वतन्त्रता के अंष 98 सार्थकता स्तर .05 के सारणी मान 1.98 से अधिक हैं। अतः पहाड़ी तथा मैदानी छात्रों के व्यक्तित्व के प्रत्येक कारकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया।

इसी प्रकार पहाड़ी छात्राओं व मैदानी छात्राओं के कारक सक्रिय–निष्क्रिय तथा उत्साही–अनुत्साही पर प्राप्त प्राप्ताकों के औसत मानों के मध्य प्राप्त किए गए टी–परीक्षण का मान क्रमषः 0.4 तथा 1.67 प्राप्त हुआ। जो स्वतन्त्रता के अंष 98 सार्थकता स्तर .05 के सारणी मान 1.98 से कम हैं। इनके मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

पहाड़ी छात्राओं व मैदानी छात्राओं के कारक अक्रामक–विनम्र, शंकालु–विष्वासी, अवसादी–अवसादमुक्त तथा भावात्मक अस्थिरता–भावात्मक स्थिरता पर प्राप्त प्राप्ताकों के औसत मानों के मध्य किए गए टी–परीक्षण का मान क्रमषः 2.38, 7.76, 7.01 तथा 5.28 प्राप्त हुआ। जो स्वतन्त्रता के अंष 98 सार्थकता स्तर .05 के सारणी मान 1.98 से अधिक पाया गया। अतः इन कारकों के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष :– तथ्यों का विष्लेषण करने के लिए पहाड़ी तथा मैदानी विद्यार्थीयों के मध्य व्यक्तित्व के आधार पर अन्तर देखा गया तथा इनके मध्य अन्तर की सार्थकता की गणना की गयी। अन्तर की सार्थकता की गणना करने पर यह पाया गया कि पहाड़ी व मैदानी क्षेत्र में रहने वाले स्नातक स्तर छात्रों के व्यक्तित्व के उत्साही–अनुत्साही तथा अक्रामक–विनम्र कारकों को छोड़कर व्यक्तित्व के किसी अन्य कारकों में अन्तर नहीं हैं। यह भी दृश्टिगोचर हो रहा है कि पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले स्नातक स्तर छात्र मैदानी क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों से ज्यादा उत्साही होने के साथ–साथ ज्यादा अक्रामक भी हैं। इसी प्रकार पहाड़ी छात्राओं तथा मैदानी छात्राओं के व्यक्तित्व में भी अन्तर दृश्टिगोचर हो रहा हैं। सक्रिय–निश्क्रिय तथा उत्साही–अनुत्साही कारकों के अलावा पहाड़ी छात्राओं तथा मैदानी छात्राओं के किसी भी अन्य व्यक्तित्व कारकों में अन्तर नहीं हैं। पहाड़ी छात्राएँ, मैदानी छात्राओं से ज्यादा सक्रिय व उत्साही हैं। इसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि पहाड़ी क्षेत्रों में वातावरण सदैव सर्द व प्रतिकूल होता हैं। पहाड़ों की विपरीत परिस्थितियों में लगातार अनुकूलन व संघर्श करते–करते वहाँ के छात्रों में उत्साह का संचार होने लगता हैं। लेकिन विशम परिस्थितियों का सामना करते हुए पहाड़ी छात्रों में

अक्रामकता भी प्रवेष कर जाती है तथा इसके विपरीत पहाड़ी छात्राओं में और भी सक्रियता आ जाती हैं।

शैक्षिक निहितार्थ :–

1–स्नातक स्तर विद्यार्थीयों को समय–समय पर निर्देषन और परामर्ष प्रदान किया जाए।

2–स्नातक स्तर विद्यार्थीयों के साथ मैत्रीपूर्ण, दया व सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

3–प्रत्येक व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत विषेशताएँ होती है, इन व्यक्तिगत विषेशताओं के आधार पर ही एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है, अध्यापकों को इन व्यक्तिगत विषशताओं के आधार पर स्नातक स्तर विद्यार्थियों के लिए भिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कराना चाहिए।

4–स्नातक स्तर विद्यार्थीयों के अन्दर सहनषीलता, सहयोग व मैत्रीपूर्ण जैसे गुणों को बढ़ावा देना चाहिए, इन गुणों के समाहित होने पर ही वे उच्च व्यक्तित्व को प्राप्त कर सकते है।

5– अध्यापकों को स्नातक स्तर विद्यार्थीयों के प्रति निश्पक्ष होना चाहिए और उनके प्रति साकारात्मक सोच रखनी चाहिए।

6–ऐसे स्नातक स्तर विद्यार्थी जिनमें ऐसे नाकरात्मक व्यक्तित्व कारक ज्यादा प्रबल हो जो उन्हें किसी परिस्थिति में अनुकूलन बाधा उत्पन्न करते हो, को सुधारने के लिए विषेश कार्यक्रमों एवं ऐसी परिस्थितियों का आयोजन करें, जिसमें भाग लेकर वो हर प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

- लाल, रमन बिहारी (2009–2010) षिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ, रस्तोगी पब्लिकेषन्स
- भटनागर, सुरेष (2010) षिक्षा मनोविज्ञान मेरठ, आर० लाल बुक डिपो
- भार्गव, मेहरा (2010), आधुनिक मनोवैज्ञानिक, आगरा एच० पी० भार्गव बुक हाऊस
- सिहं अरूण कुमार एवं सिहं, आषीष कुमार (2010) प्रतियोगिता मनोविज्ञान दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास
- कपिल, एच के (2010), सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा : विनोद मन्दिर पुस्तक